12

शिक्षा, शिक्षण और सृजन के क्षण

पवन सिन्हा*

शिक्षा की वृहद संकल्पना उसे न तो स्कूल की चारदीवारी में बाँधती है और न ही औपचारिक परीक्षा के दायरे में बाँधती है। शिक्षा स्वयं में 'मुक्ति' का साधन भी है और साध्य भी!— 'सा विद्या या विमुक्तये!' अत: वह किसी भी 'बंधन' को न तो स्वीकार करती है और न ही बच्चों या शिक्षार्थियों को किसी भी बंधन में बाँधती है। यहाँ यह समझना होगा कि बंधन और अनुशासन में अंतर होता है, अनुशासन में भी एक प्रकार का लचीलापन और उन्मुक्तता होती है, लेकिन ऐसा मनमानापन नहीं होता जो किसी दूसरे को कष्ट पहुँचाए या फिर समस्त प्रकार की मर्यादाओं का उल्लंघन करे। नदी भी जब दो पाटों के बीच बहती है तो कल्याणकारी होती है, पाटों की मर्यादाओं का उल्लंघन करते ही वह विनाशकारी हो जाती है। यही स्थिति शिक्षा की भी है और शिक्षा-जीवन की भी! शिक्षा की वृहद संकल्पना उसे सृजन से भी जोड़ती है और यह सृजनता अनेक आयाम-मुखी है। सृजनता में अनिवार्य रूप से लोक कल्याणकारी प्रवृत्ति सम्मिलित होती है जो 'स्व' से प्रारंभ होकर 'पर' तक जाती है। इस 'पर' में परायापन का भाव निहित नहीं है, बल्कि सृजन का विस्तार शामिल है कि वह केवल व्यष्टि तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि वह समष्टि के विस्तृत कैनवास पर अपनी छाप अंकित करती है।

शिक्षा की वृहद संकल्पना के मूल में अंतर्निहित शक्तियों के उद्घाटन, परिमार्जन या परिष्करण और संवर्धन का भावनिहित है। इस रूप में भी शिक्षा अंतर्निहित शक्तियों के पुंज के रूप में दृष्टिगत होती है जिसे उद्घाटित होना शेष है। अंतर्निहित शक्तियों के उद्घाटन में भी सृजना है, क्योंकि सृजन रैखिक नहीं होता। किसी भी मनुष्य के भीतर छिपी कला अनेक रूपों में अभिव्यक्त होती है; कोई गीत गाता है या तो कोई चित्रकारी करता है तो कोई नृत्य! इन समस्त रूपों में कला ही अभिव्यक्त होती है। सृजन के और अधिक गहरे अर्थ की पड़ताल करें तो कहा जा सकता है कि पढ़-सुनकर अर्थ का निर्माण करना भी स्वयं में सृजन है और बोलने-लिखने में भाषा का उचित प्रयोग करना भी सृजन है, तब हम कही-लिखी जा रही बात को अनेक रूपों में अभिव्यक्त करते हैं, भाषा की दृष्टि से देखें तो कहा जा सकता है— एक ही कथ्य यानी कही जाने वाली बात अनेक तरह से कही जा सकती है और सुनने-पढ़ने वाले एक ही पाठ्य-वस्तु

**प्रोफेसर*, मोतीलाल नेहरु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

को भिन्न-भिन्न रूप में ले सकते हैं। विषय चाहे भाषा हो या गणित, विज्ञान या सामाजिक विज्ञान— सभी में सृजन की भरपूर गुंजाइश होती है। अपनी बात, अपने शब्द, अपने वाक्य और अपना विशिष्ट अर्थ— यही पहचान है शिक्षा की! हमें अपने बच्चों को शिक्षा की यही पहचान देनी है। शिक्षा की संकीर्ण संकल्पना उसे सीखने के बंधे-बंधाए ढर्रे पर चलने के लिए बाध्य करती है। यह बाध्यता बच्चे के चिंतन, मनन और कल्पना को बाधित करती है और किसी भी प्रकार की बाधा स्वतंत्रता प्रदान नहीं करती, जबकि मनुष्य स्वभावत: स्वतंत्र है। शिक्षा एक ओर व्यक्ति के साथ जुड़ी हुई है तो दूसरी ओर परिवार, समाज और देश से। इस अर्थ में परिवार, समाज एवं देश की स्थितियाँ शिक्षा को न केवल प्रभावित करती हैं, बल्कि स्वयं भी शिक्षा से प्रभावित होती हैं, यही कारण है कि शिक्षा को समाज, देश के परिवर्तन का एक सशक्त उपकरण स्वीकार किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा की इसी वृहद अवधारणात्मक समझ को पोषित करती है और कहती है कि "शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है... शिक्षा वह उचित माध्यम से जिससे देश की समृद्ध प्रतिभा और संसाधनों का सर्वोत्तम विकास और संवर्धन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व की भलाई के लिए किया जा सकता है।" (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ. 3) शिक्षा के प्रति यह दृष्टिकोण व्यक्ति और विश्व के साथ परस्पर जुड़ा हुआ है। चिंता और चिंतन व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह विश्वव्यापी है। शिक्षा विषयों में विभाजित भी नहीं है और न ही किसी औपचारिक परीक्षा-परीक्षण में उलझी हुई, यह तो मानव है जो शिक्षा को तमाम तरह की उलझनों को उलझाए बैठा है और उसे अगली कक्षा में प्रस्थान का प्रमाणपत्र मात्र मानता है, लेकिन सवाल उठता है, अंतत: "सीखा क्या?" "मैंने क्या सीखा?"— यह नितांत निजी बात है। कई बार उस सीखे हुए की अभिव्यक्ति भी नहीं हो सकती और यहाँ 'मौन' ही शब्द होते हैं और मौन ही वाक्यों में पूरित बात! मौन का प्रारंभ तब होता है जब हमने किसी भी बात को बहुत गहराई के साथ आत्मसात कर लिया हो और हमारा पूर्ण चिंतन, व्यवहार आदि उसी से संचालित होता है। "हर बात कहने की नहीं होती।"— यह बात हमने अक्सर सुनी है और इस बात में शिक्षा की परिणति की झलक मिलती है जब हमारा सीखा हुआ हमारे व्यवहार में झलकता है, हमारी सोच में, हमारे चिंतन में झलकता है।

शिक्षा और परा संज्ञान

शिक्षा की इस अवधारणा में 'बच्चे क्या सोचते हैं', 'वे चीजों को कैसे ग्रहण करते हैं' और 'कैसा व्यवहार करते हैं'— सभी शामिल है और बच्चों के 'परा संज्ञान' (मेटा कॉग्निशन) को महत्व देता है। परा संज्ञान एक महत्वपूर्ण सृजनात्मक प्रक्रिया है जो हर बच्चे में होती तो है, लेकिन भिन्न स्वरूप में घटित होती है। आइए, एक उदाहरण से इस बात को समझते हैं, स्कूल लगा हुआ था और बारिश की हल्की-हल्की फुहारें मूसलाधार बारिश में बदल चुकी थीं। सभी बच्चे काम छोड़कर खिड़की के पास आ गए और हाथ बढ़ाकर

बारिश को अपनी छोटी-छोटी मुट्ठियों में समेटने लगे, लेकिन सिवाय मिदना के, जैसे-जैसे बारिश तेज होती जा रही थी, मिदना के चेहरे पर चिंताएँ और दुख की रेखाएँ बढ़ती चली जा रही थीं। उसका चेहरा रुँआसा हो गया था। तभी मिदना के दोस्त अंकित की नजर मिदना के चिंतित चेहरे पर पड़ी तो अंकित ने पूछा, "क्या हुआ मिदना, तुम इतने परेशान क्यों हो? देखो क्लास के सारे बच्चे बारिश का मजा ले रहे हैं और तुम यहाँ अकेले बैठे परेशान हो रहे हो, चलो उठो, बारिश का मजा लेते हैं।" अंकित ने मिदना को समझाने कि बहुत कोशिश की लेकिन मिदना टस से मस नहीं हुआ और अब उसका रोना शुरू हो चुका था। अंकित को समझ नहीं आया, आखिर मिदना रो क्यों रहा है? दरअसल, मिदना का घर कच्ची मिट्टी का है और अक्सर बारिश में ढह जाता है और उससे भारी नुकसान होता है। पिछली बार इसी बारिश में उसने अपने पिता को खोया था, जिनकी मृत्यु दीवार ढहने से हो गई थी। अब इस बारिश में घर को होने वाले नुक्सान के साथ वह किसे खोने वाला है? सभी घर में रहते हैं, बस यही सोचकर मिदना लगातार रो रहा है। अब देखिए, एक ही बारिश दो अलग बच्चों के जीवन में एक अलग अर्थ रचती है। बारिश किसी के लिए खुशी का पर्याय है तो किसी के लिए कष्ट का! दो अलग बच्चों की सोच अलग है, चिंताएँ अलग हैं और व्यवहार भी अलग है जो अंतत: हमारी चिंतन प्रक्रिया से प्रभावित होता है। मिदना और अंकित की सोच के बारे में सोचना ही 'परा संज्ञान' है जो किसी भी शिक्षक के लिए जानना, समझना जरूरी है। अक्सर कक्षा में शिक्षक सवाल पूछते हैं और बच्चे उन सवालों का जवाब देते हैं। बच्चे 'वैसा' उत्तर क्यों देते हैं या क्या सोचकर रूबीना ने 'यह' उत्तर दिया— इसकी पड़ताल हमारे शिक्षा-शास्त्र का अभिन्न हिस्सा होनी चहिए। एक शिक्षक के लिए सही जवाब के साथ-साथ गलत जवाब भी उसके चिंतन और चिंता का सरोकार होना चाहिए, तभी हम बच्चे के मस्तिष्क में झाँक सकेंगे, उसके मस्तिष्क का हिस्सा बन सकेंगे और उसके सीखने में मदद कर सकेंगे। यहाँ यह भी समझना होगा कि यह मदद भी 'रैखिक' नहीं होती, बल्कि हर पल बदलती है, नया रूप ग्रहण करती है क्यों बच्चों का चिंतन भी परिवर्तनशील है, गतिशील है!

सीखने की कला और सृजन के क्षण

यह सत्य है कि हम सब कुछ कक्षा या विद्यालय में नहीं सीख सकते, क्योंकि सीखना निरंतर चलने वाली एक प्रक्रिया है जो विद्यालय के भीतर चलने के साथ-साथ विद्यालय के बाहर चलने वाली प्रक्रिया है। वस्तुत: निरंतर सीखने के मूल में सृजन छिपा हुआ है और हम अपने सीखने को गढ़ते हुए स्वयं को गढ़ते हैं, स्वयं के व्यक्तित्व को गढ़ते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इसी विचार की अनुशंसा करते हुए कहती है कि "...बच्चे, जो कुछ सिखाया जा रहा है, उसे तो सीखे ही, और साथ ही वे सतत सीखते रहने की कला भी सीखें। इसलिए शिक्षा में विषयवस्तु को पढ़ाने की जगह जोर इस बात पर अधिक होने की जरूरत है कि बच्चे समस्या-समाधान और तार्किक एवं रचनात्मक रूप से सोचना सीखें...।" (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ.सं. 3–4) नीति स्वत: ही स्पष्ट करती है कि सीखने

में रचनात्मकता होती है और तर्क भी! तर्क और रचनात्मकता एक-दूसरे के पूरक हैं विरोधी नहीं! तर्क और रचना— दोनों में ही चिंतन शामिल होता है। हम तर्क को भी गढ़ते हैं, रचते हैं और रचनात्मकता में कल्पना आदि शामिल होती है। आइए, फिर से एक उदहारण से इसे समझते हैं। गणित की कक्षा शुरू होने वाली थी और चंपा अपनी गृहकार्य की कॉपी खोज रही थी। बस्ते में, बेंच में, बेंच के दाएँ-बाएँ, लेकिन उसकी कॉपी मिली नहीं। अब उसका मास्टरजी से डाँट खाना तय था। वह सोचने लगी कि मास्टरजी काम के बारे में पूछेंगे तो वह क्या जवाब देगी! उसने डाँट से बचने के लिए झटपट एक कहानी गढ़ दी कि आज मेरी कॉपी मेरे साथ आँख-मिचौली खेल रही है। पता नहीं, कहाँ छुप गई है। कॉपी मिलते ही तुरंत जमा कर दूँगी, बाकि आपको जो पूछना हो तो पूछ लीजिए, मुझे कल का काम आता है। चंपा के जवाब से मास्टरजी को डाँट खिलाते नहीं बना। चंपा की बात में तर्क भी था— जो सिखाया था, वह सीख लिया है और रचनात्मकता भी, कि एक कहानी बना डाली! अब अगर गहराई से सोचा जाए तो क्या इस प्रश्न का उत्तर मिल सकता है कि यह तर्क और रचनात्मकता किस विषय विशेष का हिस्सा है? यह किस विषय का पाठ्यक्रम कहता है? किसी एक विषय का नहीं, बल्कि यह बात प्रत्येक विषय के लिए अनुकरणीय है, क्योंकि हमारा मस्तिष्क सीखता है, कोई विषय विशेष सीखने की सचेत जानकारी किसी भी मस्तिष्क के पास नहीं होती! आप स्वयं यह सोचिए, जब आप कुछ सीखते हैं तो क्या केवल कोई एक विषय सीखते हैं या उस सीखने में और भी बहुत सारी बातें शामिल होती हैं जो बहुत बारीकी से देखने पर दूसरे विषयों की ज्ञान राशि नजर आती हैं। फिर क्या हमारा मस्तिष्क यह विषयगत विभाजन करता है? संभवतः नहीं!

कनुप्रिया की कक्षा इस बात को समझने में मदद करेगी। कनुप्रिया ने पहली कक्षा में एक कहानी सुनाई जिसमें एक तेंदुए ने एक बच्चे पर हमला किया और इससे पहले कि वह तेंदुए के लपेटे में आता, वह तुरंत दाईं तरफ कूद गया और तेंदुए का वार खाली चला गया। ऐसा कई बार हुआ, बच्चा कभी दाईं तरफ कूद जाता तो कभी बाईं तरफ। अब बच्चे को मजा आने लगा था। तभी दो तेंदुए और आ गए और तीनों ने एक साथ बच्चे पर वार किया, बच्चा दौड़कर घर की तरफ पहुँच गया तो थक-हारकर तेंदुए वापस जंगल चले गए...। इस कहानी में बहुत कुछ है। कहानी है तो भाषा भी है, बच्चे भाषा भी सीख रहे हैं, तेंदुओं की गिनती से गणित भी सीख रहे हैं, पूर्व-संख्या संकल्पना (प्री-नंबर कांसेप्ट) भी सीख रहे हैं। अब बताइए, कनुप्रिया किस विषय की कक्षा ले रही हैं? क्या इस कहानी को किसी एक विषय के लिए 'समर्पित' किया जा सकता है? बच्चा हर बार तेंदुए के दांव से कैसे बच गया? इसके बारे में और गहराई से सोचें तो कह सकते हैं कि बच्चे को गति, दिशा का ज्ञान होगा, अन्यथा बच्चा तेंदुए की चपेट में आ जाता। क्या हम यह सोच पा रहे थे कि बच्चा 'प्री नंबर कांसेप्ट' सीख रहा है? बच्चा तेंदुए प्रजाति के जानवरों के रहन-सहन के बारे में सीख रहा है? अब कनुप्रिया ने बच्चों से कहा कि वे कहानी में आये पात्रों में से अपने पसंदीदा पात्र का चित्र बनाएँ और उसका नाम भी लिखें। बच्चों ने ऐसा ही किया। बच्चे लिख भी

रहे हैं जो भाषायी कुशलता का उदहारण है। अब यह स्पष्ट है कि बच्चे मस्तिष्कीय स्तर पर अपने सीखने को विभाजित नहीं कर पा रहे।

सार रूप में यही बिंदु उजागर होता है कि हमारी कक्षायी शिक्षण प्रक्रिया में सर्वोपरि है, बच्चों का सीखना और इस सीखने में अर्थ-निर्माण या अर्थ का सृजन शामिल है जिसे हर बच्चा स्वयं गढ़ता है। कई बार ऐसा होता है कि शिक्षा कि सही अवधारणात्मक समझ के अभाव में हम बच्चों के लिए सीखने को कठिन बना देते हैं या शिक्षा विरोधी कार्य कर बैठते हैं। इस संदर्भ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बातें हैं— 1) बच्चे को समझना, 2) बच्चे की भाषा को समझना, 3) बच्चे की भाषा को कक्षा में स्थान देना, 4) बच्चे के परिवार, संस्कृति, समाज और आर्थिक पक्ष को जानना, 5) बच्चे में सकारत्मक आत्मधारणा का विकास करना। बच्चों के कल्पित बोध का विकास करना उनके सीखने में मदद करता है। साथ ही बच्चों में सार्थकता और सफलता के बोध को भी विकसित करना होगा। यह तभी संभव है जब हम बच्चों के भीतर छिपी क्षमताओं की सही-सही पहचान कर सकेंगे। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ.सं. 6–7) अपने निम्नलिखित मूलभूत सिद्धांतों के माध्यम से बच्चों को केंद्र में रखते हुए शिक्षण प्रक्रिया को संपादित करने की चर्चा करती है—

- हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उसके विकास हेतु प्रयास करना;
- लचीलापन ताकि उनके सीखने के तौर-तरीके और कार्यक्रमों को चुनने की क्षमता हो।
- सभी ज्ञान की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करना;
- अवधारणात्मक समझ पर जोर;
- रचनात्मकता और तार्किक सोच, तार्किक निर्णय को प्रोत्साहन देना;
- बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन।

जैसा कि पूर्व में भी यह स्पष्ट किया गया था कि बच्चों का परिवेश उनके सीखने को प्रभावित करता है। उनके घर में कैसा माहौल है? परिवार के सदस्य परस्पर मिलजुलकर रहते हैं या नहीं? क्या माता-पिता में रोज रात को झगड़ा, मार-पिटाई आदि होती है और उसका बच्चे पर क्या प्रभाव पड़ता है?

आइए, इशिका से मिलते हैं! इशिका नाम है उन स्वप्नों का जो सभी बच्चे देखते हैं! इशिका नाम है उस खुशी का जो हर बच्चे का अधिकार है! इशिका नाम है उस पीड़ा का जो वह हर लड़की झेलती है जिसकी केवल बहनें हैं, कोई भाई नहीं! इशिका नाम है उस भूख का जो वे बच्चे अक्सर महसूस करते हैं, जिनके घर में माता-पिता के बीच झगड़ा होता है, कलेश होता है तो चूल्हा-चौका बंद हो जाता है! इशिका नाम है 5 वर्ष की उस बच्ची का जो कक्षा में अपनी मुस्कान से सबका मन मोह लेती है!

इशिका के घर का माहौल अक्सर बहुत तनावग्रस्त हो जाता है। इसका मुख्य कारण है— इशिका के माता-पिता के बीच का झगड़ा। पिता अक्सर माँ से झगड़ा करते हैं और माँ को मारते-पीटते भी हैं। गाली-गलौच का तो छोड़ ही देते हैं, उसकी गिनती संभव नहीं है। जब भी रात को माता-पिता के

बीच भयंकर मार-पिटाई होती है तो ये बच्चे झगड़े वाली रात भूखे पेट ही सो जाते हैं! कोई इनसे पूछे कि इन बच्चियों का क्या कसूर है? कसूर है और वह कसूर है लगातार चार बेटियों का होना! माँ ने चार बेटियाँ पैदा कीं और एक भी लड़का नहीं! तो इसकी सजा माँ के साथ-साथ इन बच्चियों को भी मिलती है!

बच्चे इस पीड़ा को भी झेलते हैं और भूख को भी! रात को भूखे पेट कैसे नींद आती होगी बच्चों को? इशिका के जीवन में जो है और जो आगे होगा— उस सबके प्रति मौन भरी स्वीकृति! सरल नहीं है! इशिका जैसे हजारों-लाखों बच्चे होंगे जो घर की कलह से परेशान हो जाते हैं और जिसका नकारात्मक असर उनके सीखने और मन-मस्तिष्क पर पड़ता है।

एक और बच्चा है— सावन! सावन को सब्जी बेचने में बड़ा मजा आता है! क्यों न आए! परिवार का पेट तो पालना ही है! सब्जी बेचने से पैसे मिल जाते थे और पैसे से भोजन मिल जाता था! सावन जैसे बच्चों के लिए यह बहुत बड़ी बात है, बहुत बड़ी उपलब्धि है कि जीने भर को जो पेट को चाहिए, वह मिल जाए! जब सावन से पूछा था, "आज स्कूल क्यों नहीं गए?"

"स्कूल की फीस नहीं भरी तो!"

"तो तुम तीनों में से कोई भी स्कूल नहीं जाता?"

"ना!"

इस बड़े से 'न' के साथ सावन के परिवार के जीवन में शामिल बहुत सारी जरूरतों और सुख-चैन के लिए भी 'न' का अंदाजा हो गया।

ये कुछ ऐसे उदहारण हैं जो बच्चों को नजदीक से समझने में मदद करते हैं और उनकी जिंदगी को समझने में मदद करते हैं। यह तय है कि स्कूल का 'समाजशास्त्र' घर के 'समाजशास्त्र' से प्रभावित होता है और शिक्षा का एक 'कर्तव्य' यह भी है कि वह घर का 'समाजशास्त्र' भी समझे। जितनी बेहतर यह समझ होगी उतना ही बेहतर शिक्षाशास्त्र होगा। यह सत्य है कि स्वानुभूत चिंतनपरक स्थायी महत्व के मौलिक विचारों से अनुप्राणित शिक्षा, शिक्षण की अवधारणा ही सृजन के क्षणों को पोषित कर सकती है। यही शिक्षा का शिक्षत्व है!

संदर्भ

आप्टे, वामन शिवराम. 1997. *संस्कृत हिंदी कोश*. न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, न्यू चंद्रावल, दिल्ली.

ओड, लक्ष्मीलाल के. 2011. *शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि*. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 1975. *दस वर्षीय स्कूली पाठ्यक्रम की रूपरेखा*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.